

سُورَةُ الْحَاقَّةِ

Surah 69 — Al-Haaqqa (The Reality) · Meccan · 52 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الْحَاقَّةُ

सच मुच होने वाली (क्रियामत)

2

مَا الْحَاقَّةُ

और सच मुच होने वाली क्या चीज़ है

3

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ

और तुम्हें क्या मालूम कि वह सच मुच होने वाली क्या है

4

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ

(वही) खड़ खड़ाने वाली (जिस) को आद व समूद ने झुठलाया

5

فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ

गरज़ समूद तो चिंघाड़ से हलाक कर दिए गए

6

وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ

रहे आद तो वह बहुत शदीद तेज़ आँधी से हलाक कर दिए गए

7

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ ۖ وَثَمْنِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا ۖ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ
أُعْجَازٌ نَّخْلٍ خَاوِيَةٍ ۖ

खुदा ने उसे सात रात और आठ दिन लगाकर उन पर चलाया तो लोगों को इस तरह ढहे (मुर्दे) पड़े देखता कि गोया वह खजूरों के खोखले तने हैं

8

فَهَلْ تَرَى لَهُم مِّنْ بَاقِيَةٍ ۖ

तू क्या इनमें से किसी को भी बचा खुचा देखता है

9

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ ۖ وَالْمُؤْتَفِكْتُ بِالْخَطِيبَةِ

और फिरऔन और जो लोग उससे पहले थे और वह लोग (क्रौमे लूत) जो उलटी हुई बस्तियों के रहने वाले थे सब गुनाह के काम करते थे

10

فَعَصَوْا ۖ رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً ۖ رَّابِيَةً

तो उन लोगों ने अपने परवरदिगार के रसूल की नाफ़रमानी की तो खुदा ने भी उनकी बड़ी सख्ती से ले दे कर डाली

11

إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ

जब पानी चढ़ने लगा तो हमने तुमको कशती पर सवार किया

12

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً ۖ وَتَعِيهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاعِيَةٌ ۖ

ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और उसे याद रखने वाले कान सुनकर याद रखें

13

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ ۖ وَاحِدَةٌ ۖ

फिर जब सूर में एक (बार) फूँक मार दी जाएगी

14

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً ۚ وَحِدَةً ۚ

और ज़मीन और पहाड़ उठाकर एक बारगी (टकरा कर) रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएँगे तो उस रोज़ क़यामत आ ही जाएगी

15

فَيَوْمَئِذٍ ۚ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ

और आसमान फट जाएगा

16

وَأَنْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۚ

तो वह उस दिन बहुत फुस फुसा होगा और फ़रिश्ते उनके किनारे पर होंगे

17

وَالْمَلَكُ عَلَى أَرْجَائِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ۚ

और तुम्हारे परवरदिगार के अर्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने सरो पर उठाए होंगे

18

يَوْمَئِذٍ ۚ تُعَرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۚ

उस दिन तुम सब के सब (खुदा के सामने) पेश किए जाओगे और तुम्हारी कोई पोशीदा बात छुपी न रहेगी

19

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ ۚ بِيَمِينِهِ ۚ فَيَقُولُ هَآؤُمُ اقْرَءُوا ۚ كِتَابِيَهٗ

तो जिसको (उसका नामए आमाल) दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह (लोगो से) कहेगा लीजिए मेरा नामए आमाल पढ़िए

20

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْقٍ حِسَابِيَهٗ

तो मैं तो जानता था कि मुझे मेरा हिसाब (किताब) ज़रूर मिलेगा

21

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۚ

फिर वह दिल पसन्द ऐश में होगा

22

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍۑ

बड़े आलीशान बाग में

23

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌۑ

जिनके फल बहुत झुके हुए करीब होंगे

24

كُلُوا۟ ۖ وَأَشْرَبُوا۟ ۖ هَنِيئًاۑ بِمَاۤ أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ

जो कारगुज़ारियाँ तुम गुज़िशता अय्याम में करके आगे भेज चुके हो उसके सिले में मज़े से खाओ पियो

25

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابُهُۥۑ بِشِمَالِهِۖۑ فَيَقُولُ يُلَيِّتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهٗ

और जिसका नामए आमाल उनके बाएँ हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा ऐ काश मुझे मेरा नामए अमल न दिया जाता

26

وَلَمْ أُدْرِ مَا حِسَابِيَهٗ

और मुझे न मालूल होता कि मेरा हिसाब क्या है

27

يُلَيِّتَهَا كَانَتْ الْقَاضِيَةَ

ऐ काश मौत ने (हमेशा के लिए मेरा) काम तमाम कर दिया होता

28

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهٗۑ

(अफ़सोस) मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया

29

هَلَاكَ عَنِّي سُلْطَانِيَهٗ

(हाए) मेरी सल्तनत खाक में मिल गयी (फिर हुक़्म होगा)

30

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ

इसे गिरफ्तार करके तौक पहना दो

31

ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ

फिर इसे जहन्नुम में झोंक दो,

32

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا ۖ فَاسْلُكُوهُ

फिर एक जंजीर में जिसकी नाप सत्तर गज की है उसे खूब जकड़ दो

33

إِنَّهُ ۚ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ

(क्यों कि) ये न तो बुजुर्ग खुदा ही पर ईमान लाता था और न मोहताज के खिलाने पर आमादा (लोगों को) करता था

34

وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمَسْكِينِ

तो आज न उसका कोई गमख्वार है

35

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَهُنَا حَمِيمٌ ۚ

और न पीप के सिवा (उसके लिए) कुछ खाना है

36

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۚ

जिसको गुनेहगारों के सिवा कोई नहीं खाएगा

37

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ

तो मुझे उन चीजों की कसम है

38

فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ

जो तुम्हें दिखाई देती हैं

39

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ

और जो तुम्हें नहीं सुझाई देती कि बेशक ये (कुरान)

40

إِنَّهُ ۖ لَقَوْلُ رَسُولٍ ۖ كَرِيمٍ ۖ

एक मोअज़िज़ फरिश्ते का लाया हुआ पैगाम है

41

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۖ قَلِيلًا ۖ مَّا تُؤْمِنُونَ

और ये किसी शायर की तुक बन्दी नहीं तुम लोग तो बहुत कम ईमान लाते हो

42

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۖ قَلِيلًا ۖ مَّا تَذْكُرُونَ

और न किसी काहिन की (ख्याली) बात है तुम लोग तो बहुत कम गौर करते हो

43

تَنْزِيلٌ ۖ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ

सारे जहाँ के परवरदिगार का नाज़िल किया हुआ (क़लाम) है

44

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ

अगर रसूल हमारी निस्वत कोई झूठ बात बना लाते

45

لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ

तो हम उनका दाहिना हाथ पकड़ लेते

46

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

फिर हम ज़रूर उनकी गर्दन उड़ा देते

47

فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ

तो तुममें से कोई उनसे (मुझे रोक न सकता)

48

وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ

ये तो परहेज़गारों के लिए नसीहत है

49

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ

और हम खूब जानते हैं कि तुम में से कुछ लोग (इसके) झुटलाने वाले हैं

50

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ

और इसमें शक नहीं कि ये काफ़ि़रों की हसरत का बाएस है

51

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ

और इसमें शक नहीं कि ये यक़ीनन बरहक़ है

52

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ

तो तुम अपने परवरदिगार की तसबीह करो